नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आर्थिक प्रगति की रीढ़ हैं हमारे युवा

सोमवार को स्वामी विवेकानंद जयंती पूरे देश में युवा दिवस के रूप में मनाई गई . भारत आज जिस आत्मविश्वास के साथ 21वीं सदी में आगे बढ़ रहा है, उसके केंद्र में देश की युवा शक्ति है. औसत आयु लगभग 28 वर्ष होने के कारण भारत दुनिया का सबसे युवा देश माना जाता है. यह केवल जनसांख्यिकीय आंकड़ा नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलावों की सबसे बड़ी ऊर्जा है. जिस देश की आधी से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की हो, वहां संभावनाओं की कोई सीमा नहीं होती, बशर्ते दिशा सही हो और अवसर मिलें.

भारतीय युवाओं ने देश की अर्थव्यवस्था को नई रफ्तार दी है. स्टार्टअप इंडिया की सफलता, यूनिकॉर्न कंपनियों की बढ़ती संख्या और डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार इसका प्रमाण हैं. आज वैश्विक मंच पर भारतीय युवा आईटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, फिनटेक, हेल्थटेक और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहे हैं. गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम जैसी वैश्विक कंपनियों में भारतीय युवाओं की निर्णायक भूमिका केवल प्रतिभा का नहीं, बल्कि भारत के बदलते सामर्थ्य का संकेत है. देश के भीतर भी युवा उद्यमी रोजगार मांगने वाले नहीं, बल्कि रोजगार देने वाले बन रहे हैं.

युवा केवल आर्थिक शक्ति नहीं, सामाजिक परिवर्तन के संवाहक भी हैं. लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और समावेशी विकास जैसे मुद्दों पर युवाओं की भागीदारी पहले से कहीं अधिक मुखर और संगठित है. स्वच्छ भारत, जल संरक्षण, डिजिटल साक्षरता और स्वयंसेवी आंदोलनों में युवाओं की सक्रियता ने सामाजिक चेतना को नया आयाम दिया है. सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से युवा न केवल अपनी आवाज उठा रहे हैं, बल्कि समाज को जवाबदेह भी बना रहे हैं.

दरअसल, लोकतंत्र की मजबूती में युवाओं की भूमिका निर्णायक होती जा रही है. मतदान प्रतिशत में युवाओं की बढ़ती भागीदारी, छात्र राजनीति से लेकर पंचायत और संसद तक उनकी उपस्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था को नई ऊर्जा देती है. युवा नेता नीतियों में पारदर्शिता, तकनीक आधारित शासन और विकास-केंद्रित राजनीति की मांग कर रहे हैं. इससे भारतीय राजनीति में विमर्श का स्तर बदला है और भविष्य की दिशा अधिक स्पष्ट हुई है.भारतीय युवा विज्ञान और अनुसंधान में भी नई ऊंचाइयां छू रहे हैं. अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर जैव-प्रौद्योगिकी तक युवा वैज्ञानिक भारत को आत्मनिर्भर बना रहे हैं. खेलों में ओलंपिक और विश्व मंचों पर भारतीय युवाओं की उपलब्धियां देश का सिर गर्व से ऊंचा कर रही हैं. वहीं सिनेमा, संगीत, योग और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से युवा भारत की सांस्कृतिक शक्ति को वैश्विक पहचान दिला रहे हैं.

आज भारतीय युवा दुनिया भर में केवल नौकरीपेशा नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता, नवप्रवर्तक और विचारक के रूप में पहचाने जा रहे हैं. 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों की आत्मा युवा ही हैं. सही नीति, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास के साथ यह युवा शक्ति भारत को विकसित राष्ट्र की ओर ले जाने में निर्णायक साबित होगी. कुल मिलाकर युवा शक्ति भारत के वर्तमान की सबसे मजबूत ताकत है,जो देश को भीतर से सशक्त और बाहर से प्रभावशाली बना रही है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

चाहत पूरी होगी या फिर ठगाएंगे अरुण

संजय व्यास

प्रदेश में इस साल अप्रैल से जून के बीच राज्य सभा की तीन सीटें रिक्त होने वाली हैं. संभावित चुनाव को लेकर अभिलाषी नेताओं के प्रत्याशी बनने को लेकर दौड़-भाग शुरू हो गई है. संख्या बल को देखते हुए इनमें से 2 सीटें भाजपा को जाना तय है. एक सीट कांग्रेस के खाते में जाएगी. उक्त अवधि में जो राज्य सभा से निवृतमान हो रहे हैं उन सदस्यों में वरिष्ठ कांग्रेसी नेता दिग्विजय सिंह, अंचल के बड़वानी जिले के भाजपा नेता महेंद्र सिंह सोलंकी शामिल हैं. तीसरे केंद्रिय मंत्री जार्ज कुरियन हैं. इनमें से भाजपा किन्हें भेजती है, किन्हें रिपीट करती है यह अलग विषय है. मामला कांग्रेस में उलझ रहा है.

चुनावी समीकरण बैठाने वालों के अनुसार कांग्रेस इस सीट से किसी ओबीसी को राज्य सभा भेजना चाहती है. अब इसी गणित के मद्देनजर अंचल के ही दावेदार 2 नेता आमने-सामने हैं.

एक वर्तमान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी हैं, तो दूसरे पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव हैं. अरुण यादव लंबे समय से केंद्रीय राजनीति पर नजरें लगाए हैं. प्रदेश की राजनीति में विभिन्न छत्रपों की लड़ाई का खमियाजा वे भुगतते रहे हैं. नंदकुमार सिंह चौहान के निधन पर हुए खंडवा लोक सभा उपचुनाव से ही उन्हें प्रदेश पार्टी में अपनी उपेक्षा महसूस होती रही है.

फरवरी 2024 के राज्य सभा चुनाव में भी यादव ने दिल्ली तक दौड़ लगाई थी. लगभग फायनल टिकट मान रहे यादव को तब झटका लगा था जब राज्य सभा टिकट चंबल क्षेत्र से अशोक सिंह को प्रत्याशी बना दिया गया. केंद्रीय नेतृत्व से सदा की तरह इस बार भी आश्वस्त अरुण यादव फिर मंसूबे पाले बैठें हैं. अब देखते हैं कि चाहत पूरी होती है या ठगाए जाते हैं.

पार्षद की प्रतिष्ठा को लगी ठेस

मंदसौर नगर पालिका के भाजपा पार्षद अपनी प्रतिष्ठा को लगी ठेस से इन दिनों बौखलाए हुए हैं. नगर पालिका कर्मचारियों और पार्षद प्रतिनिधि के बीच हुए विवाद का मामला थाने तक पहुंच गया और पार्षद प्रतिनिधि पर प्रकरण कायमी भी हो गई, जो पार्षद को नागवार गुजरा. इस कार्रवाई से नाराज पार्षद ने अब अधिकारियों-कर्मचारियों को निशाना बनाते हुए उनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है. मामला पार्षद एवं भाजपा जिला संयोजक विधि प्रकोष्ठ तथा सदस्य लोक निर्माण एवं स्वच्छता समिति आशीष गौड़ (एड्व्होकेट) से जुड़ा है.

गत सप्ताह नगरपालिका परिषद् मंदसौर के सहायक इंजीनीयर रोहित केथवास तथा पार्षद प्रतिनिधि विक्रम भैरवे के मध्य अचानक विवाद हो गया जिसके चलते नगरपालिका इंजीनीयर रोहित केथवास द्वारा शहर कोतवाली मंदसौर में पार्षद प्रतिनिधि विक्रम भैरवे के खिलाफ मारपीट, शासकीय कार्य में बाधा का प्रकरण दर्ज करवाया दिया था. यही नहीं घटना के अगले दिन नगरपालिका अधिकारी- कर्मचारी पार्षद प्रतिनिधि द्वारा की गई घटना के विरूद्ध में लामबंद हो गये और प्रतिनिधियों के हस्तक्षेप रोकने हडताल भी कर दी. इसके बाद आशीष गौड़ ने हड़ताल को मुद्दा बना लिया है.

उन्होंने कलेक्टर से मांग की है कि कर्मचारियों द्वारा बिना बताये हडताल पर चले जाने तथा नगरपालिका में अचानक ताला लगा दिये जाने से आमजन के कार्य प्रभावित हुए. कर्मचारियों पर शासकीय कार्य के प्रति जानबुझकर लापरवाही एवं निकाय को हानि पहुंचाने के गंभीर कदाचरण की श्रेणी होने के कारण अनुशासत्मक व दण्डात्मक कार्यवाही की जाए.

एक जांच का मुद्दा यह भी

इन दिनों इंदौर के भागीरथ पुरा का नगर निगम द्वारा आपूर्ति में दूषित जल और उससे हुई कई मौतों का मामला सुलगा हुआ है. पानी से संक्रमण कैसे फैला उसका सर्वे हो रहा है. जांच बैठाई गई है. स्थिति सम्हालने में भोपाल तक का अमला लगा हुआ है. इस हादसे का जिम्मेवार कौन है, यह तो बाद में सामने आएगा. पर सवाल यह है कि भागीरथपुरा में हादसा हो गया, लेकिन शहर भर में कई हिस्से में जलापूर्ति का शुरूआती पानी गंदा आता है. यह समस्या वर्षों की है. इसके कारणों के पीछे चर्चा है कि पेयजल लाइन को मनमाने तरीके से कहीं भी रोका, जोड़ा जाता रहा है, ताकि कहीं किसी क्षेत्र में पानी का प्रेशर लो रहे (इसी जोड़- तोड़ से लिकेज व गंदे पानी के मिलने की संभावना अधिक रहती है). इससे उपजे जल संकट के बाद शुरू होता है टेंकरों से पानी का खेल और वारे-न्यारे होते हैं इससे जुड़े कुछ लोगों के. लोग खुला नहीं बोलते पर उम्मीद कर रहे हैं कि इसकी भी जांच हो.

सोमनाथ से सत्ता तक | आस्था की राजनीति और भाजपा का प्रयोग

श्याम यादव

> आडवाणी की रथ यात्रा से लेकर मोदी की सोमनाथ यात्राओं तक, भाजपा ने इस मंदिर को अपनी वैचारिक निरंतरता का आधार बनाया है. यह गठजोड़ किसी दस्तावेज में दर्ज नहीं, लेकिन हर चुनावी मौसम में, हर राष्ट्रवादी भाषण में उसकी उपस्थिति साफ दिखाई देती है. जब तक आस्था राजनीति की सबसे असरदार भाषा बनी रहेगी, सोमनाथ भाजपा की उस भाषा का सबसे मजबूत शब्द बना रहेगा.

सोमनाथ भारतीय राजनीति में अब केवल इतिहास या आस्था का विषय नहीं है. वह एक राजनीतिक संकेतक है—ऐसा संकेतक, जो यह बताता है कि सत्ता किस स्मृति को जीवित रखना चाहती है और किसे भुला देना चाहती है. आज़ादी के बाद जिस सोमनाथ को राष्ट्र निर्माण की बहस के बीच सावधानी से रखा गया था, वही सोमनाथ अब खुली राजनीतिक अभिव्यक्ति का मंच बन चुका है. फर्क बस इतना है कि तब सवाल धर्म और राज्य की दूरी का था, आज सवाल धर्म और सत्ता के विलय का है. 1947 के बाद सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण को लेकर देश में तीखी बहस हुई थी.

सरदार पटेल और के.एम. मुंशी इसे राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न मानते थे, जबकि प्रधानमंत्री नेहरू राज्य को धार्मिक प्रतीकों से दूर रखने के पक्ष में थे. 1951 में जब मंदिर का लोकार्पण हुआ और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद उसमें शामिल हुए, तब यह स्पष्ट हो गया कि धर्म और राजनीति की यह खींचतान आगे और गहरी होगी. यही वह ऐतिहासिक बिंदु था, जिसे बाद में भाजपा ने अपनी वैचारिक पूंजी में बदला. जनसंघ के दौर में यह विचार हाशिये पर था. तब देश की मुख्यधारा राजनीति धर्मनिरपेक्षता के दायरे में खुद को सुरक्षित महसूस करती थी. लेकिन 1980 के बाद स्थितियां बदलने लगीं. भाजपा की स्थापना के साथ यह समझ बन चुकी थी कि केवल नीतियों और कायक्रमों से सत्ता तक पहुंचना मुश्किल है. भावनाओं को छूना होगा, और भारत में सबसे गहरी भावना आस्था है. 1984 के चुनाव में सिर्फ दो सीटें जीतने वाली भाजपा के लिए यह झटका नहीं, संकेत था-कि रास्ता बदलना होगा.

1990 की आडवाणी रथ यात्रा उसी बदले हुए रास्ते की पहली खुली घोषणा थी. सोमनाथ से अयोध्या तक निकली यह यात्रा किसी धार्मिक अनुष्ठान की तरह नहीं, बल्कि राजनीतिक अभियान की तरह संचालित की गई. रथ यात्रा के बाद देश में जो हुआ, वह दर्ज इतिहास है—सांप्रदायिक तनाव, हिंसा, सरकारों का गिरना. लेकिन इन सबके बीच भाजपा का ग्राफ लगातार ऊपर जाता रहा. 1989 में 85 सीटें, 1991 में 120 और 1996 में 161 सीटें. यह केवल चुनावी आंकड़े नहीं थे, यह इस बात का प्रमाण थे कि धर्म अब राजनीति की सबसे प्रभावी भाषा बन चुका है. इस पूरी प्रक्रिया में सोमनाथ एक स्थायी संदर्भ बना रहा. वह यह बताने के लिए इस्तेमाल किया गया कि हमने इतिहास में अपमान सहा और अब हम उसे सुधार रहे हैं. यह सुधार मंदिर निर्माण तक सीमित नहीं रहा, यह स्मृति निर्माण तक फैल गया. इतिहास के जटिल अध्यायों को सरल कथा में बदला गया—टूटा, लूटा, फिर खड़ा किया गया. इस कथा में सवालों के लिए जगह नहीं थी, केवल विश्वास के लिए स्थान था. 2014 के बाद यह राजनीति और अधिक आत्मविश्वास के साथ सामने आई. नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद आस्था और सत्ता के बीच की औपचारिक दूरी लगभग समाप्त हो गई.

प्रधानमंत्री के रूप में उनकी सोमनाथ यात्राएं निजी धार्मिक कर्मकांड नहीं रहीं. वे सार्वजनिक आयोजनों में बदलीं, जिनका सीधा राजनीतिक अर्थ निकाला गया. हर तस्वीर, हर वक्तव्य यह संदेश देता रहा कि अब राज्य धर्म से असहज नहीं है, बल्कि उसे मंच दे रहा है. सरकारी आंकड़ों में इसे विकास का नाम दिया गया. धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हजारों करोड़ की परियोजनाएं शुरू हुईं. सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट की आय में भारी वृद्धि हुई, गुजरात में तीर्थाटन से होने वाली आमदनी कई गुना बढ़ी. विकास और आस्था को एक ही फ्रेम में रखकर पेश किया गया. सवाल उठाने वालों को संस्कृति-विरोधी और आस्था-विरोधी बताया गया. इस तरह बहस को नैतिकता से बाहर कर दिया गया. भाजपा बार-बार कहती रही कि वह धर्म नहीं, संस्कृति की राजनीति करती है. लेकिन व्यवहार में संस्कृति का अर्थ वही निकला, जो बहुसंख्यक आस्था के अनुकूल था. अल्पसंख्यक सवाल धीरे-धीरे राष्ट्रीय विमर्श से बाहर होते गए.

धर्मनिरपेक्षता एक संवैधानिक मूल्य से अधिक एक असुविधाजनक शब्द बन गई. राष्ट्रवाद की परिभाषा इतनी संकरी होती चली गई कि उसमें सवाल पूछने की गुंजाइश ही नहीं बची. सोमनाथ, काशी और अयोध्या—ये तीनों स्थल अब धार्मिक से अधिक राजनीतिक स्थलों में बदल चुके हैं. यहां होने वाली हर गतिविधि का सीधा संबंध चुनावी राजनीति से जुड़ जाता है. आस्था को वोट में बदला जाता है और वोट को वैधता में. यह एक ऐसा चक्र है, जिसमें लोकतांत्रिक बहस धीरे-धीरे कमजोर पड़ती जाती है. आखिरकार प्रश्न यह नहीं है कि भाजपा ने धर्म की राजनीति की या नहीं.

भारत में निर्मित होंगे राफेल विमान

राफेल विमान का भारत में निर्माण होने से देश के औद्योगिक सिस्टम में परिष्कृत टेक्नोलॉजी आएगी. हैदराबाद के जेवर में बन रही फैक्ट्री में इंजन प्रोडक्शन प्लांट के अलावा मेंटेनेंस, रिपेयर व ओवरहॉल (एमआरओ) हब भी होगा.

गत वर्ष जून में टाटा एडवांस्ड सिस्टम लिमिटेड (टीएएसएल) ने कांस के डसाल्ट एविएशन के साथ भारत में राफेल फाइटर विमान का मुख्य भाग (फ्यूसलेज) निर्मित करने का समझौता किया था. इसके लिए टीएएसएल हैदराबाद में फैक्टरी डाल रही है. इसमें 4 मुख्य सदस्यों में राफेल विमान का ढांचा तैयार किया जाएगा. यह फैक्टरी भारत की जरूरतों के लिए विमान बनाएगी और साथ ही डसाल्ट को अन्य देशों से मिले ऑर्डर पूरा करने के लिए और भी यूनिट निर्मित करेगी. फ्यूसलेस की पहली यूनिट 2028 तक बनकर तैयार हो जाएगी. फैक्ट्री में प्रतिवर्ष 24 फ्यूसलेस बनाने की क्षमता होगी. राफेल विमान का भारत में निर्माण होने से देश के औद्योगिक सिस्टम में परिष्कृत टेक्नोलॉजी आएगी. हैदराबाद के जेवर में बन रही फैक्ट्री में इंजन प्रोडक्शन प्लांट के अलावा मेंटेनेंस, रिपेयर व ओवरहॉल (एमआरओ) हब भी होगा. लगभग 60 प्रतिशत विमान भारत में ही निर्मित हो जाएंगे. बाकी हिस्से फ्रांस से आएंगे. फरवरी में 'फ्रांस' के राष्ट्रपति मैक्रों भारत आने वाले हैं, तब उनकी उपस्थिति में राफेल विमान सौदे को लेकर बड़े समझौते पर हस्ताक्षर होंगे. भारतीय वायुसेना को बड़े पैमाने पर आधुनिक तकनीक वाले लडाकू विमानों की आवश्यकता है, जो अमेरिका के एफ-16 व एफ-18 विमानों के समकक्ष या उनसे बेहतर हो, साथ ही उनकी कीमत भी वाजिब हो, इसलिए यह समझौता दोनों देशों की सरकारों के बीच होगा. भारत ने गत वर्ष फ्रांस के साथ नौसेना के विमानवाही पोत के लिए 24 विमान खरीदने का समझौता किया था. इस पर अरबों यूरो की लागत आएगी. वायुसेना ने 114 विमानों की मांग की है. समझौते को अंतिम रूप सुरक्षा से जुड़ी कैबिनेट समिति देगी. इसके लिए बजट में उपयुक्त प्रावधान करना होगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

महाभारत में सिद्धांतों पर समझौता आज भी राजनीति में यह होता

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमारे नेता अपनी संस्कृति से जुड़े हुए हैं. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने अजीत पवार के नेतृत्व में राकांपा के साथ गठबंधन पर उठ रहे सवालों का जवाब देते हुए कहा कि अपनी नीतियों को लागू करने के लिए सत्ता जरूरी है. महाभारत के युध्द में भी सिध्दांतों पर समझौते हुए थे. फडणवीस के इस कथन पर आपकी क्या राय है.'

हमने कहा, 'महाराष्ट्र यदि महाभारत का अनुकरण करता है तो इसमें क्या गलत है? रामायण में नैतिकता थी तो महाभारत में छल-कपट प्रतिघात, क्रूरता और कुटिलता. आप चाहें तो महाभारत जैसे कौरव-पांडव, शकुनि मामा व धृतराष्ट्र को महाराष्ट्र में भी खोज लीजिए. भगवान कृष्ण ने 100 शक्तिशाली कौरवों और उनकी बहुत बड़ी सेना के मुकाबले पांडवों को जिताया था. भीष्म, द्रोण और कर्ण जैसे महारथी कृष्ण की कूटनीति के सामने फेल हो गए थे. द्रोणाचार्य को उनके पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का झूठा समाचार देकर युध्द का मैदान छोड़ने के लिए बाध्य किया

गया था. यह उस जमाने की डिसइन्फार्मेशन तकनीक थी. भीष्म के सामने शिखंडी को खड़ा कर अर्जुन ने बाणों से उनका संपूर्ण शरीर छलनी कर दिया था. कर्ण के रथ का पहिया कीचड़ में फंस गया था. वह रथ को दलदल से बाहर निकालने के लिए उतरा तो कृष्ण ने अर्जुन को आदेश दिया कि यही मौका है, अभी इसे मार दे. यदि वह रथ में सवार हो गया तो उसे मारना असंभव हो जाएगा. निहत्थे कर्ण को अर्जुन ने अपने तीखे बाणों से वहीं मार डाला. कौरवों ने भी 16 साल के वीर अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेरकर मार डाला. 7 महारथियों ने उसे घेरकर मारने में क्रूरता की पराकाष्ठा की.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज महाभारत काल में भी दलबदल हुआ था. कौरवों का एक भाई युयुत्सू पांडवों के पक्ष में आ गया था. नकुल व सहदेव का मामा मद्रराज शल्य भी कौरवों की ओर से लड़ा था. निशस्त्र भगवान कृष्ण पांडवों के साथ थे जबकि उन्होंने अपनी नारायणी सेना दुर्योधन को दे दी थी. पहले महाभारत सिर्फ कुरुक्षेत्र में हुआ था लेकिन अब हर चुनाव में महाभारत होता है. यह जनता पर निर्भर है कि उसके पात्रों को पहचान ले. तब शकुनि के पासे थे, अब लुभावनी खैरात की पौ-बारह है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12140 - डॉ. सागर खादीवाला

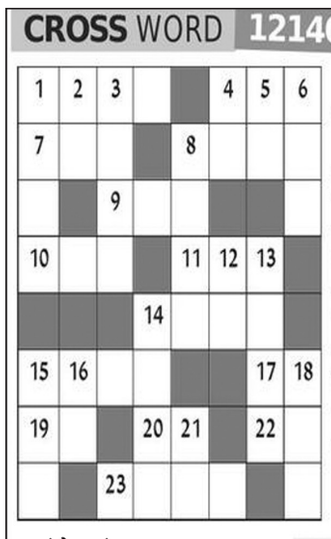

1. नाखून का निशान (सं.) 2. समस्त, कुल, सारा, संपूर्ण 3. भीषण या विकट दुर्घटना, दंगा-फसाद 4. पेंच-पुर्जी, अवयव 5. दूध का खोया 6. लड़ाई, लड़ने का ढब 8. हुज्जत, विवाद, झगड़ा 12. वायु 13. धूम, हलचल 14. नौका के पिछले भाग में लगी वह लकड़ी जिससे नौका इधर-उधर घुमाई जाती है 15. नष्ट करना 16. सीधी रेखा या दिशा 18. ठीक प्रकार से काम करने का ढंग, शऊर 21. छाती, कपड़े को धागे से जोड़ना

बाएं से दाएं
1. नकसुंघनी, सुंघनी 4. अनोखा काम, निपुणता (उर्दू) 7. समाचार, सूचना 8. असि, खंग 9. जलाने वाला, जलन पैदा करने वाला 10. तपा हुआ, गरम 11. चैन, सुख, आराम 14. चिंता 15. सीख, उपदेश, अच्छी राय 17. वह गुण जिससे कोई वस्तु चिपकती हो, गोंद 19. इच्छा, अभिलाषा 20. रहने वाला, निवास करने वाला 22. चंडी, पार्वती, एक नाग जिसे यमुना में श्रीकृष्ण ने मारा था 23. वेश्या (सं.)

ऊपर से नीचे

Solution 12139

प्र	भा	व	शा	ली	■	चु	ल्लू
सा	व	न	■	न	का	ना	■
र	■	रा	ख	■	व्य	व	स्था
■	क	ज	रा	रा	■	■	प
■	र	■	ब	ह	रि	या	ना
च	प	ला	■	च	र	■	■
ख	ल्ल	ड़	■	ल	■	ना	क
ना	व	■	म	ता	धि	का	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिककार्यों में सफ्लता मिलेगी, नवीन योजनाों का शुभारंभ होगा, वर्षके मध्यमेंतीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, राज सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी,वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, कार्यक्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी, धन संकट का सामना करना होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं मेंवृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियोंको राजसम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा करना होगी, धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक परेशनी से मन विचलित रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को साहस बना रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्ति यात्रा प्रवास के शौकीन होते हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, हष्टपुष्ट तथा बचपन में ज्वर, विकार, निमोनिया आदि से तकलीफ हो सकती है, बाद में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. किसी तकनीकी शिक्षा का ज्ञाता होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

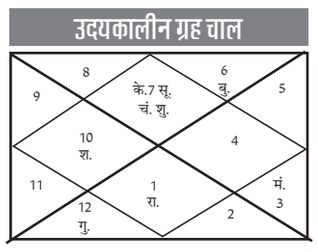

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2082 माघ कृष्ण दशमीं भौमवासरे दिन 3/51, विशाखा नक्षत्रे रात 12/54, शूल योगे रात 8/19, विष्टि करणे सू.उ. 6/43, सू.अ. 5/17, चन्द्रचार तुला शाम 6/17 से वृश्चिक, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

माघ कृष्ण दशमीं को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से अलसी, अरंडी, बिनौला, मूँगफ्ली, घी तिल, गुड़, खांड़, शक्कर, में तेजी होगी. सभी धातु वस्तुओं में उतार चढाव आयेगा. व्यापार बाजार की लाईन देखकर कार्य करें. भाग्यांक 3720 है.

मेष- मामूली सी बात पर मित्रों से कहासुनी हो सकती है, बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी. संतान का सहयोग मिलेगा. सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी.

वृषभ- अपने व्यक्तिगत मामले में दूसरों की दखल से बचें, शिक्षा के मामले में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा. आप परिवर्तन करना चाहते हैं, तो सफ्लता मिलेगी.

मिथुन- भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. कार्यस्थल की बाधायें दूर होंगी. रहन सहन अच्छा रहेगा. मातापिता का सुख मिलेगा. यात्रा में सफ्लता प्राप्त होगी.

कर्क- आप मन में किसी बात को लेकर भयभीत हो सकते हैं, प्रियजन का साथ वृश्चिके बढ़ने में हिम्मत देगा. आर्थिक मामले में प्रगति होगी. घरेलू कार्योंमें व्यस्तता रहेगी.

सिंह- व्यापार विस्तार की संभावना बनेगी. कामकाज में देरी हो सकती है. थोडे लाभ में भी वाणी में सौम्यता एवं मधुरता रहेगी. आय का मार्ग सुलभ होगा.

कन्या- कार्यक्षेत्र में आ रही दिक्कतें दूर होंगी. छोटे छोटे झगड़े बड़े विवाद का कारण बन सकता है. कार्य बनेगा, जिससे लाभ होगा. उच्चाधिकारियों का सहयोग रहेगा.

तुला- परिचितों के कारणआपको कार्य करने में मुश्किल आ सकती है. वाद विवाद हो सकता है, नई योजनाओं का विचार होगा. शुभ सूचना प्राप्त होगी.

वृश्चिक- पारिवारिक परेशानी दूर होने से शांति मिलेगी. नए लोग आपसे जुड़ने का प्रयास करेंगे. सम्मान में वृद्धि होगी. शत्रु की गतिविधियों पर नजर रखें.

धनु- विरोधियों की चाल से नुकसान की संभावना है. सतर्क रहकर कार्य करें. अचानक किसी पारिवारिक जिम्मेदारी का अनुभव होगा. नई योजना से लाभ होगा.

मकर- अनजान लोगों पर अधिक भरोसा नुकसान में डाल सकता है. फोन पर शुभ संदेश मिलेगा. मकान संपत्ति पर किये गये प्रयास सफ्ल होंगे.

कुम्भ- जल्दी काम निवटाने के लिये किसी का सहयोग लेना पड़ेगा. नए काम की तलाश में सफ्लता मिलेगी.व्यवसायिक योजनाओं को बल मिलेगा.

मीन- साझेदारी में कोई बड़ी योजना शुरू कर सकते हैं. कुटुम्बियों का सहयोग मिलेगा. शिक्षा प्रतियोगिता में चल रहा प्रयास सफ्ल होगा.

SUDOKU 7272

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7271

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2